प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण के प्रथम वर्ष का पाठ्यक्रम

अनुक्रमिका

क्र०सं०	विषय		पृष्ठ संख्या
1.	भूमिका		3
2.	वार्षिक परीक्षा के लिए अंकों का विभाजन (प्रथम वर्ष)		5

प्रथम वर्ष का पाठ्यक्रम

3.	फाउन्डेशन कोर्स	प्रथम पत्र नवोदित भारतीय समाज में शिक्षा एवं शिक्षण	6
4.	फाउन्डेशन कोर्स	द्वितीय पत्र – शिक्षा मनोविज्ञान	8
5.	पंचम पत्र	हिन्दी भाषा शिक्षण : विषयवस्तु सह शिक्षण विधि	10
6.	षष्टम पत्र	अंग्रेजी शिक्षण : विषयवस्तु सह शिक्षण विधि	12
7.	सप्तम पत्र	संस्कृत शिक्षण : विषयवस्तु सह शिक्षण विधि	14
8.	सप्तम पत्र (क)	बंगला शिक्षण : विषयवस्तु सह शिक्षण विधि	16
9.	सप्तम पत्र (ख)	उर्दू शिक्षण : विषयवस्तु सह शिक्षण विधि	17
10.	सप्तम पत्र (ग)	मुण्डारी भाषा शिक्षण : विषयवस्तु सह शिक्षण विधि	18
11.	सप्तम पत्र (घ)	संताली भाषा शिक्षण : विषयवस्तु सह शिक्षण विधि	20
12.	सप्तम पत्र (ड़)	हो भाषा शिक्षण : विषयवस्तु सह शिक्षण विधि	22
13.	सप्तम पत्र (च)	खड़िया भाषा शिक्षण : विषयवस्तु सह शिक्षण विधि	24
14.	सप्तम पत्र (छ)	कुडुख भाषा शिक्षण : विषयवस्तु सह शिक्षण विधि	26
15.	सप्तम पत्र (ज)	नागपुरी भाषा : विषयवस्तु सह शिक्षण विधि	28
16.	सप्तम पत्र (झ)	कुड़माली भाषा शिक्षण : विषयवस्तु सह शिक्षण विधि	30

क्र०सं०	विषय		पृष्ठ संख्या
17.	सप्तम पत्र (ञ)	खरोठा भाषा शिक्षण : विषयवस्तु सह शिक्षण विधि	32
18.	सप्तम पत्र (ट)	पंचपरगनिया भाषा शिक्षण : विषयवस्तु सह शिक्षण विधि	34
19.	अष्टम पत्र	गणित शिक्षण : विषयवस्तु सह शिक्षण विधि	36
20.	नवम पत्र	पर्यावरण अध्ययन : 1 सामाजिक विज्ञान शिक्षण : विषयवस्तु सह शिक्षण विधि	38
21.	दशम पत्र	पर्यावरण अध्ययन : 2 सामान्य विज्ञान शिक्षणः विषयवस्तु सह शिक्षण विधि	39
22.	एकादश पत्र	शिक्षण अभ्यास : प्रथम एवं द्वितीय वर्ष	41
23.	द्वादश पत्र	कम्प्यूटर – प्रथम वर्ष	43
24.	त्रयोदश पत्र	कार्यनुभव एवं शारीरिक शिक्षा – प्रथम वर्ष	44
25.	चतुदर्श पत्र	सामुदायिक जीवन – प्रथम एवं द्वितीय वर्ष	46

भूमिका

झारखंड राज्य के गठन के साथ ही शिक्षा के उत्तरोतर विकास पर जोर डाला जा रहा है। विशेषकर प्राथमिक शिक्षा को सुदृढ़ करने के उपाय किए जा रहे हैं। प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता के उदात्तीकरण हेतु प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण को अत्याधुनिक एवं प्रभावकारी बनाना उत्यंत आवश्यक है। पूरे देश में शिक्षण प्रशिक्षण को राष्ट्रीय मानक स्तर पर लाने हेतु सन् 1993 ई० में संसद में एक्ट पास कराके कानून बनाते हुए राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद को संपूर्ण देश के लिए नियम बनाने, प्रशिक्षण के राष्ट्री स्तर कायम करने हेतु मार्गदर्शन करने, प्रशिक्षण महाविद्यालयों को मान्यता देने एवं शिक्षक प्रशिक्षण के लिए न्यूनतम अहर्ता निर्धारित करने का अधिकार दिया है। इसके आलोक में वर्त्तमान राष्ट्रीय आवश्यकता, भावी चुनौती समाज में मानवीय एवं नैतिक मूल्यों की स्थापना, पर्यावरण सुरक्षा के प्रति जागरूकता विभिन्न कौशलों का विकास, बहुआयामी व्यक्तित्व का विकास आदि को झारखण्ड राज्य के पाठ्यक्रम में महत्व दिया गया है।

नवीन पाठ्यक्रम द्वारा शिक्षा में नवीन चेतना, सबल कौशलपूर्ण व्यक्तित्व, अपेक्षित व्यवहार कुशलता, पर्याप्त कार्यक्षमता आदि विकसित करने का प्रयास किया गया है। शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे नवीन प्रयोगों को उपयोग में लाने, शिक्षा की जीवनोपयोगी बनाने, नवीन तकनीक को अपनाने एवं शिक्षा को सर्वसुलभ बनाने का प्रयास इस पाठ्यक्रम द्वारा किया जा रहा है। शिक्षण में व्यावहारिक पक्ष पर बल देने, शिक्षार्थियों के निदान के प्रति संवेदनशील होने, सामाजिक, आर्थिक एवं तकनीकी परिवर्तन के साथ ही शिक्षा की दशा एवं दिशा परिवर्तन की प्रवृत्ति विकसित करने में पाठ्यक्रम उपयोगी सिद्ध होगा।

पाठयक्रम की विशेषताएँ:

द्विवर्षीय प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम की निम्नलिखित विशेषताएँ है –

1. यह पाठ्यक्रम राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परीषद् (NCTE) फ्रेमवर्क को ध्याम में रखते हुए तैयार किया गया है।
2. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम को चार सेमेस्टर में विभक्त कर शैक्षिक सत्र चलाया जाएगा। प्रथम वर्ष में दो सेमेस्टर और द्वितीय वर्ष में दो सेमेस्टर होंगे। प्रत्येक सेमेस्टर की समाप्ति के साथ मूल्यांकन होगा जिसका अभिलेख रखा जाएगा।
3. आन्तरिक एवं बाह्य मूल्यांकन/परीक्षा को व्यवहारिक उपयोगिता के मानक स्तर पर लाने हेतु प्रयास किया जा रहा है।
4. व्यवहारिक एंव सुलभ बनाने के लिए पाठ्यक्रम को चार भागों में विभाजित किया गया है :–
   - क) फाउन्डेशन कोर्स
   - ख) विषयवस्तु सह शिक्षण विधि
   - ग) शैक्षणिक क्रियाकलाप
   - घ) शिक्षण अभ्यास, कार्यानुभव एवं उपयोगी व्यवहारिक कार्य

5. प्रथम वर्ष फाउन्डेशन कार्से में नवोदित भारतीय समाज में शिक्षा एवं शिक्षक तथा शिक्षा मनोविज्ञान को रखा गया है। द्वितीय वर्ष फाउन्डेशन कोर्स में विद्यालय संगठन, निर्देशन एवं परामर्श तथा शैक्षिक प्रौद्योगिकी एवं मूल्यांकन को रखा गया है।

6. शिक्षा के भूमण्डलीकरण को ध्यान में रखते हुए अंग्रेजी विषयवस्तु सह शिक्षण विधि को अनिवार्य विषय के रूप में रखा गया है। अंग्रेजी शिक्षण विधि को सरल, रोचक एवं वैज्ञानिक तरीके से सजाया गया है।

7. हिन्दी के साथ–साथ मातृभाषा–बंगला एवं उर्दू, जनजातीय भाषा–मुण्डारी, संथाली, हो खड़िया, कुडुख, क्षेत्रीय भाषा–नागपुरी, कुड़माली, खोरठा, पंचपरगनिया के शिक्षण को पाठयक्रम में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है।

8. वर्तमान समय में कम्प्यूटर शिक्षा वर्तमान शिक्षा प्रणाली का अनिवार्य अंग बन गया है। इसलिए विशेष अनुभव साथ कम्प्यूटर शिक्षा को अनिवार्य शिक्षा के रूप में पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है।

9. कार्यानुभव के अन्तर्गत कृषि, बागवानी, कटाई–सिलाई, गृह विज्ञान, कोलार्ज कार्य को शामिल कर जीवनोपयोगी बनाया गया है।

10. सामुदायिक जीवन के माध्यम से समुदाय एवं विद्यालय के संबंध में सुदृढ़, सम्पूरक एवं व्यावहारिक बनाने के उपाय किया गया है।

11. प्रशिक्षाणार्थी में शिक्षण कौशल को सुदृढ़ करने के लिए सूक्ष्म शिक्षण, आदर्श पाठ, समालोचना पाठ एवं अभ्यास शिक्षण को पर्याप्त स्थान देकर शिक्षण कला को प्रतिस्थापित करने का उपाय किया गया है।

12. इस पाठ्यक्रम के द्वारा कला एवं संस्कृति का विकास, राष्ट्रीय एकता एवं सामाजिक समभाव के प्रति अभिरूची उत्पन्न करने का प्रयास किया गया है।

इस पाठ्यक्रम सृजन के लिए झारखण्ड अधिविध परिषद ने देश के विभिन्न राज्यों के संपर्क कर उनसे सहयोग प्राप्त किया। विभिन्न शिक्षाविदों के कर्मठ परिश्रम से प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण के पाठ्यक्रम का यह प्रारूप तैयार हो सका। परिषद आशान्वित है कि प्रशिक्षण महाविद्यालयों में सभी शिक्षक–प्रशिक्षक अपनी विद्वता एवं अनुभव व प्रभावपूर्ण तरीके से इसका क्रियान्वयन कर प्रशिक्षणार्थियों को लाभान्वित करायेंगे।

वार्षिक परीक्षा के लिए अंकों का विभाजन
प्रथम वर्ष

क्र० सं०	पत्र	विषय का नाम	बाह्य पूर्णांक	मूल्यांकन पूर्णांक	आतंरिक पूर्णांक	मूल्यांकन पूर्णांक
1.	फाउन्डेशन प्रथम पत्र	नवोदित भारतीय समाज में शिक्षा एवं शिक्षक	60	24	40	16
2.	फाउन्डेशन द्वितीय पत्र	शिक्षा मनोविज्ञान	60	24	40	16
3.	पंचम पत्र	हिन्दी भाषा शिक्षण : विषयवस्तु सह शिक्षण विधि	60	24	40	16
4.	षष्टम पत्र	अंग्रेजी शिक्षण : विषयवस्तु सह शिक्षण विधि	60	24	40	16
5.	सप्तम पत्र	संस्कृत / बंगला / उर्दू / मुण्डारी / संथाली / हो / खड़िया / कुडुख नागपुरी / कुड़माली / खोरठा / पंचपरगनिया शिक्षण : विषयवस्तु सह शिक्षण विधि	60	24	40	16
6.	अष्टम पत्र	गणित शिक्षणः विषयवस्तु सह शिक्षण विधि	60	24	40	16
7.	नवम पत्र	पर्यावरण अध्ययनः 1. सामाजिक विज्ञान शिक्षण : विषयवस्तु सह शिक्षण विधि	60	24	40	16
8.	दशम पत्र	पर्यावरण अध्ययनः 2. सामान्य विज्ञान शिक्षण : विषयवस्तु सह शिक्षण विधि	60	24	40	16
9.	एकादश पत्र	शिक्षण अभ्यास	40	16	40	24
10.	द्वादश पत्र	कम्प्यूटर			100	40
11.	त्रयोदश पत्र	कार्यानुभव–2 विषय एवं शारीरिक शिक्षा–प्रथम वर्ष	15x2=30 +20=50	20	15x2=30 +20=50	
12.	चतुदर्श पत्र	सामुदायिक जीवन			100	40

फाउन्डेशन कोर्स : फाउन्डेशन पत्र : प्रथम
नवोदित भारतीय समाज में शिक्षा एवं शिक्षक

इकाई 1: शिक्षा तथा इसके उद्देश्य

- शिक्षा का अर्थ, परिभाषा, उद्देश्य, शिक्षा के कार्य
- शिक्षा का स्वरूप
- औपचारिक, अनौपचारिक, न–औपचारिक शिक्षा
- व्यक्ति एवं समाज के विकास में शिक्षा की भूमिका।
- सामाजिक एवं आर्थिक विकास में शिक्षा की भूमिका।

इकाई 2: शिक्षण शैली की नई अवधारणा :

- परिचय एवं विशेषताएँ
- परम्परागत एवं क्रियाशील आधारित शिक्षण की तुलना।
- क्रियाशीलनों के प्रचार एवं उनका परिचय।

इकाई 3: शिक्षा की विभिन्न अवधारणाएँ :

- जॉन डिवी, फ्रोबेल, पेस्टोलॉजी, रूसो, मारिया, मॉन्टेसरी।
- परिचय एवं विशेषताएँ
- प्रकृतिवाद, आदर्शवाद, प्रयोजनवाद, यथार्थवाद।
- बुनियादी शिक्षा (गाँधीवाद)
- सौन्दर्य विषयक शिक्षा (रविन्द्रनाथ टैगोर)

इकाई 4: शिक्षा में आधुनिक विचारधारा :

- शिक्षा एवं आधुनिकीकरण
- शिक्षा एवं राष्ट्रीय एकता
- अन्तर्राष्ट्रीय अवबोध के लिए शिक्षा
- पर्यावरण शिक्षा
- मानवधिकार
- जनसंख्या शिक्षा
- मूल्याधारित शिक्षा

इकाई 5: शिक्षा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति:

- भारतीय संविधान में शिक्षा संबंधी नीति।
- समाजवाद, प्रजातंत एवं धर्मनिरपेक्षा के राष्ट्रीय लक्ष्य के परिपेक्ष्य में प्राथमिक
- शिक्षा के उद्देश्य।
- प्राथमिक शिक्षा का सार्वजनीकरण।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति का परिचय।
- 1968, 1992 एवं विद्यालय शिक्षा के नये पाठ्यक्रम का ढाँचा 2006 के मुख्य बिंदु।

इकाई 6: झारखण्ड में प्राथमिक शिक्षा

- झारखण्ड में शिक्षा एवं साक्षरता की स्थिति।
- प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण में उत्पन्न समस्याएँ एवं सरकार तथा अन्य स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा किए गये प्रयास एवं सुझाव।
- शिक्षक प्रशिक्षण को प्रभावी बनाने के तरीके, सरकार द्वारा किए गए प्रयास एवं सुझाव।

क्रियाकलाप :

महत्वपूर्ण प्रश्नों को समूह चर्चा के लिए उपलब्ध कराना, समूह का रिपोर्ट प्रस्तुत करना। विशिष्ट बालकों के दो समूह के बीच प्रतियोगिता आयोजित कर उनकी स्मरण शक्ति, वाकपटुता एवं बुद्धि का परीक्षण करते हुए विवरणी तैयार करना।

(क) शिक्षा का स्वरूप

(ख) प्रकृतिवाद, आदर्शवाद, प्रयोजनवाद, यथार्थवाद पर आधारित क्विज एवं वाद–विवाद का आयोजन करना।

निम्नलिखित विषयों पर निबंध अथवा भाषण प्रतियोगिता का आयोजन करना–

(क) राष्ट्रीय एकता

(ख) पर्यावरण शिक्षा

(ग) मानवाधिकार

(घ) जनसंख्या शिक्षा

स्थानीय दो अनौपचारिक/न औपचारिक शिक्षा केन्द्र जाकर उनके क्रियाकलाप से संबंधित जानकारी प्राप्त करना और उनका प्रतिवेदन प्रस्तुत करना।

फाउन्डेशन कोर्स : द्वितीय पत्र
शिक्षा मनोविज्ञान

इकाई 1: शिक्षा मनोविज्ञान का अर्थ, प्रकृति एवं क्षेत्र

- शिक्षा मनोविज्ञान का अर्थ एवं प्रकृति (स्वरूप)
- शिक्षा मनोविज्ञान का क्षेत्र

प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के लिए शिक्षा मनोविज्ञान का महत्व

इकाई 2: बाल व्यवहार का अध्ययन

- व्यवहार के सिद्धान्त
- व्यवहार के निर्धारक तत्व
- बालकों के व्यवहार के अध्ययन की विधियाँ–अवलोकन, पूछताछ/साक्षात्कार, जीवन–इतिहास

इकाई 3 : बालक की वृद्धि एवं विकास

- वृद्धि एवं विकास की अवधारणा।
- विकास की मुख्य अवस्थाएँ।
- विकास की अवस्थाएँ–बाल्यवस्था से किशोरावस्था तथा शारीरिक, बौद्धिक, सांवेगिक एवं भाषा विकास

इकाई 4 : व्यक्तित्व विकास एवं समायोजन

- व्यक्तित्व का अर्थ, परिभाषा एवं प्रकार
- व्यक्तित्व के विकास में वंशानुक्रम, जैविक कारक एवं वातावरण का महत्व
- समायोजन का अर्थ, विद्यालय, समुदाय एवं परिवार में समायोजन की महत्वपूर्ण तकनीक।

इकाई 5 : व्यक्तिगत, विभिन्नता एवं इसका शैक्षिक प्रभाव :

- व्यक्तिगत विभिन्नता
- क्षमता, अभिरूचि, आदत, अभिवृति, सांवेगिक एवं बौद्धिक उपलब्धि और इनका शैक्षिक प्रभाव।

इकाई 6 : शिक्षा और अधिगम

- अधिगम का अर्थ, परिभाषा एवं सिद्धांत
- अधिगम के विभिन्न तरीके–अवलोकन, अनुकरण, स्मृति, दृष्टिकोण, अनुसंधान,
- कौशल, सूचना प्रक्रिया
- भूल एवं प्रयत्न सिद्धांत, प्रभाव का सिद्धांत, अंतर्दृष्टि का सिद्धांत

क्रियाकलाप:

- छोटे बच्चों एवं अर्द्ध किशोरों के दो अलग–अलग समूहों के व्यवहार का अध्ययन करते हुए उनकी व्यवहारगत विशेषताओं एवं समस्याओं का वर्णन करना।
- विशिष्ट बालकों के दो समूहों के बीच प्रतियोगिता आयोजित कर उनकी स्मरण शक्ति, वाक्पटुता एवं बुद्धि का परीक्षण करते हुए विवरणी तैयार करना।
- विशिष्ट बालकों का शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक परीक्षण करते हुए उन्हें उचित शिक्षा प्रदान करने के लिए सुझाव देना।
- किन्हीं दो समस्यात्मक बालक का जीवन इतिहास (केस स्टडी) तैयार करना।
- बाल्यावस्था के दो एवं किशोरावस्था के तीन बालक/बालिका की विशेषताओं का पता लगाना।
- दो बालक / बालिका की अभिरूचि एवं दो बालक / बालिका की आदतों का पता लगाकर उनका अभिलेख प्रस्तुत करना।

पंचम पत्र

हिन्दी भाषा का शिक्षण : विषयवस्तु सह शिक्षण विधि

इकाई 1 भाषा का अर्थ एवं स्वरूप

- भाषा का अर्थ, परिभाषा, स्वरूप एवं महत्व
- हिन्दी भाषा के इतिहास की संक्षिप्त जानकारी
- मानव हिन्दी भाषा के माध्यम से संक्षेपण
- राष्ट्रभाषा हिन्दी एवं उसकी विशेषताएँ
- भाषा और बोली

इकाई 2 : मातृभाषा का अर्थ एवं परिचय

- मातृभाषा का अर्थ, परिभाषा
- मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा
- मातृभाषा शिक्षण के उद्देश्य
- झारखण्ड की प्रमुख भाषा – मुंडारी, संताली, हो, खड़िया, कुडुख, नागपुरी, कुड़माली खोरठा इनका सामान्य परिचय।

इकाई 3 : गद्य–पद्य शिक्षण :

गद्य शिक्षण – परिचय, गद्य शिक्षण की विधि – आदर्श वाचन, अनुकरण वाचन, मौन वाचन, अभिनय विधि, प्रश्नोत्तर विधि, घटना वर्णन, दृश्य वर्णन।

पद्य शिक्षण – परिचय, पद्य शिक्षण की विधि–सस्वर वाचन, गीत विधि, व्याख्या विधि, अर्थ भाव बोध, अनुकरण विधि।

इकाई 4 : व्याकरण :

- ध्वनि के लक्ष्य एवं भाषायी ध्वनि
- हिन्दी के स्वर, व्यंजन तथा उनका वर्गीकरण
- शब्द परिचय एवं उनके भेद
- लिंग, वचन, कारक, काल, वाच्य।

इकाई 5 : भाषा शिक्षण विधि

- पाठ्यपुस्तक विधि
- प्रश्नोत्तर विधि
- व्याख्या विधि
- खेल विधि
- देखो और कहो
- कहानी विधि

क्रियाकलाप :

- द्रुत वाचन कराना, कविता का सस्वर पाठ करना।
- कहानी एवं कविता लेखन प्रतियोगिता में सभागिता।
- पत्र लेखन, आवेदन पत्र लेखन, संक्षेपण लेखन में भाग लेना।
- हिन्दी भाषा पर क्षेत्रीय भाषा के प्रभाव डालने वाले शब्द/वाक्य की सूची तैयार करना।
- स्थानीय परिवेश में प्रचलित लोकोक्तियों एवं मुहावरों का संकलन करना।
- सूक्तियों एवं सुभाषितों का लेखन।
- पाठ योजना एवं शिक्षण सामग्री का निर्माण करना।

नोट : सभी प्रशिक्षाणार्थी कक्षा 01 से कक्षा 08 तक की पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करेंगे।

Sixth Paper
English Teaching : Content cum Methodology

Unit 1 : Methodology

(a) Purpose of Learning in the present context.

(b) Aims of Learning English to develop language skills.

(c) Psychology of language learning.

(i) Motivation

(ii) Meaningful Expression

(iii) Distracting Factor

(iv) Language Habits.

Unit 2 : Method of Teaching English

(a) The Grammar & Translation Method.

(b) The Direct Method

(c) The Structural Method

(d) The Electric Method

(e) The Situational Method

(f) The Communicative Method

Unit 3 : Oral Expression

- Narration of Stories, Events.
- Dramatization of stories, events etc.
- Poem presentation with proper turning.

Unit 4 : Teaching Reading to Beginners

(i) Reading readiness Programme.

(ii) Method of teaching : recording words and phrase, sentence method, story method.

(iii) Reading aloud shall silent reading

Unit 5 : Common Defects :

Physical, emotional defects and their rectification

Personal Projects :

(1) Preparation of special teaching materials apart from charts.

(2) Listing one's strength and weakness, regarding knowl edgeand expression of English language and its remedy.

(3) Listening to students' speech; finding out spelling defects and suggesting remedies.

(4) Doing a project in order to help students to learn English

(5) Make a chart of similar and dissimilar words according to their pronunciation.

(6) Make a chart to show to one's continual growth in any one or two of the language skills.

(7) Prepare a lesson plan for teaching English

Note : All trainees will take part in any analytical study of text books of class one to eight.

सप्तम पत्र
संस्कृत शिक्षण : विषयवस्तु सह शिक्षण विधि

इकाई 1: संस्कृत शिक्षण के उद्देश्य एवं महत्व

- संस्कृत शिक्षण के उद्देश्य एवं महत्व : आधुनिक भारतीय भाषा से तुलना, भारत में संस्कृत शिक्षा स्थिति, संस्कृत शिक्षण का सांस्कृतिक, साहित्यिक भाषागत एवं व्यवहारिक महत्व

इकाई 2 : संस्कृत शिक्षण का स्वरूप

- विद्यालय पाठ्यक्रम में संस्कृत का स्थान एवं महत्व, प्रारंभिक काल एवं आधुनिक काल में संस्कृत के स्थिति, इसके स्वरूप एवं स्तर में अंतर, संस्कृत भाषा की संरचना एवं इसके वैशिष्ट्य, संस्कृत और शिक्षा

इकाई 3 : श्रवण एवं वाचन कुशलता की विधियाँ

- संस्कृत उच्चरण, श्रवण अभ्यास, मौखिक कार्य, शब्दार्थ का अभ्यास, साधारण शब्दों क मौखिक संयोजन।

इकाई 4 : संस्कृत लेखन एवं पठन कुशलता की विधियाँ

- वार्तालाप का अभ्यास, संस्कृत लेखन एवं पठन की विभिन्न विधियाँ, इसके गुण एवं दोष, संस्कृत गद्य एवं पद्य का सस्वर पाठ, गद्य एवं पद्य की संरचना में अंतर, संस्कृत के अनुच्छेदों की संगीतात्मकता।
- लेखन कार्य, अनुच्छेद लेखन, शब्दों को विश्लेषण एवं उच्चरण, सामान्य अभ्यास पाठ।

इकाई 5 : व्याकरण

- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, वचन एवं कारक
- शब्दरूप – अस्मद्, युस्मद्, तद्।
- धातुरूप – स्था, पठ, गम एवं दृश।

इकाई 6 : संस्कृत शिक्षण की विधियाँ

- स्वरोच्चारण विधि
- अनुकरण विधि
- अभ्यास विधि
- प्रश्नोत्तर विधि

क्रियाकलाप :

- अनुच्छेद लेखन का अभ्यास करना।
- संस्कृत शब्दों एवं वाक्यों का अभ्यास करना।
- संस्कृत कविता के सस्वर पाठ प्रतियोगिता में भाग लेना।
- संस्कृत कहानी लेखन प्रतियोगिता में भाग लेना।
- संस्कृत वार्तालाप का अभ्यास करना।
- संस्कृत एकांकी का प्रदर्शन करना।
- संस्कृत शिक्षण से संबंधित पाठ योजना तैयार करना।

नोट : सभी प्रशिक्षाणार्थी कक्षा 01 से कक्षा 08 तक की पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करेंगे।

सप्तम पत्र (क)

बंगला शिक्षण : विषयवस्तु सह शिक्षण विधि

মাতৃভাষা-বাংলা-বিষয়বস্ত সহ শিক্ষণ বিধি

১) ভাষা-মাতৃভাষা এবং তার স্বরুপ

ভাষার অর্থ, মাতৃভাষার, পরিভাষা, বিস্তৃতি ও মহত্ব

মাতৃভাষা শিক্ষণের উদ্দেশ্য এবং ব্যক্তিজীবনে উপযোগিতা

মাতৃভাষা বাংলার ও বাংলা সাহিত্যের ক্রমবিকাশ সম্মন্ধে সংশিপ্ত জ্ঞান।

মাতৃভাষা বাংলায় স্থানভেদে বিশেষ আঞ্চলিক প্রভাব।

২) মাতৃভাষা-শিক্ষার মাধ্যম

বাংলা ভাষার মহত্ব ও ব্যাপকতা।

বাংলার মাধ্যমে শিক্ষণ।

মাতৃভাষা বাংলা শিক্ষণ ও শিক্ষণের উদ্দেশ্য।

শিক্ষার মাধ্যম রুপে বাংলা - সমস্যা ও সমাধানের উপায়।

৩) গদ্য-পদ্য শিক্ষণ

গদ্য শিক্ষণ - পরিচয়, গদ্য শিক্ষণ বিধি-আদর্শ বাচন, আদর্শ পঠন, অনুকরণ বাচন, মৌন গল্প কথন. অভিনয় বিধি, প্রশ্নোত্তর বিধি,বর্ণন বিধি-ঘটনা বর্ণন, দৃশ্য বর্ণন।

পদ্য শিক্ষণ-পরিচয়, পদ্যশিক্ষণ বিধি-সরব পাঠ, নীরব-পাঠ, পদ্য আবৃত্তি, অনুকরণ বিধি, অর্থবোধ বিধি, ভাববোধ বিধি।

৪) ব্যাকরণ

ধ্বনির পরিচয় - ধ্বনি ও বর্ণ, বর্ণমালা।

বর্ণমালার বিভাজন ও তাদের বৈশিষ্ঠ্য।

শব্দ - পদ পরিচয়- ও তাদের ভেদ।

পুরুষ, বচন, লিঙ্গ, কাল, বাচ্য, কারক।

৫) ভাষা শিক্ষণ বিধি (শিক্ষণ পদ্ধতি)

পাঠ্যপুস্তক অনুগামী, প্রশ্নোত্তর, ব্যাখ্যা, গল্প কথন।

দেখা ও বলা, খেলার ছলে, আবৃত্তি ও বাদানুবাদ।

৬) ক্রিয়া কলাপ-

স্বরচিত কবিতা, গল্প, ভ্রমন বৃত্তান্ত রচনা প্রতিযোগিতার আয়োজন।

পত্রলেখন, আবেদন পত্র লেখন, হস্তলিপি প্রতিযোগিতার আয়োজন,

আঞ্চলিক বৈশিষ্ঠ্য অনুসারে অভিনয়-নাটক ইত্যাদির আয়োজন।

প্রচলিত ও প্রাসঙ্গিক প্রবাদ - প্রবচন ও লোকোক্তির সংকলন।

মহাপুরুষদের শিক্ষামূলক বাণীর সংকলন।

পাঠ্য সহগামী সামগ্রী ও শিক্ষণ সামগ্রী নির্মাণ ও সংকলন।

প্রশিক্ষু প্রথম শ্রেণী থেকে পঞ্চম শ্রেণী পর্য্যন্ত প্রচলিত বাংলা পাঠ্যপুস্তক অবশ্যই অধ্যয়ন করবে।

सप्तम पत्र (ख)

उर्दू शिक्षण : विषयवस्तु सह शिक्षण विधि

سال اول کا نصاب

اردوزبان کی تدریس : تدریسی موضوع معہ طریقہ تدریس

اکائی ١ ۔ اردوزبان کے معنی اور شکل

☆ زبان کے معنی اور شکلتعریف اوراہمیت۔

☆ اردوزبان کے کی مختصر تاریخی معلومات۔

☆ معیاری اردو کے ذریعہ تخلیص نگاری۔

☆ مادری زبان اوراسکی خاصیت۔

☆ زبان اور بولی۔

اکائی ۲۔ مادری زبان سے مراد اور تعارف

☆ مادری زبان سے مراد اور تعریف اوراہمیت۔

☆ مادری زبان کے ذریعہ تعلیم۔

☆ مادری زبان کے غیر معمولی مقاصد۔

☆ صوبہ جھارکھنڈ کی اہم بولیاں۔سنتھالی، کڑکھ، منڈاری، ناگپوری، کھڑیا، ہو، پنچ پرگنیا، کھورٹھا، کرمالی، ان سبھی کا عام تعارف۔

اکائی ۳۔ تدریس نثر ونظم ۔

☆ نثری درس۔تعارف، نثری درس کا طریقہ، مطالعہ، روایتی مطالعہ، خاموش مطالعہ، کہنا سننا، اداکاری کا ذریعہ، سوال وجواب کے ذریعہ، سانحہ کا بیان، منظرکشی یا منظر کا بیان۔

☆ نظم کی تدریس۔تعارف، منظوم درس کا طریقہ، مترنم پڑھنا، نغماتی طرز، وضاحتی طرز، مطالب فہمی طرز، خیالات فہمی طرز، روایتی طرز۔

اکائی ۴ آواز کی علامت اور حروف کے تلفظ۔

☆ اوردو کے اعراب (Vowel) حروف صحیح (Consonent) اورانکی قسمیں۔

☆ لفظ۔تعارف اورانکی قسمیں۔

☆ جنسیت، عددیت، حالت، زمانہ اورطور (Voice)

اکائی ۵ تدریس زبان کا طریقہ۔

☆ نصابی کتاب کا طریقہ، سوال وجواب کا طریقہ۔وضاحتی طریقہ۔کھیل کے ذریعہ دیکھو اور کہو، قصّہ کے ذریعہ۔

کارکردگی۔

☆ کہانی لکھنے اور شعر کہنے کے مقابلے میں شرکت۔

☆ خطوط نویسی، درخواست لکھنا، تلخیصنگاری میں شرکت۔

☆ اردوزبان پراثر ڈالنے والے علاقائی زبان کے الفاظ، جملوں کی فہرست تیّار کرنا۔

☆ علاقائی حلقہ میں مروج ضرب المثل اور محاوروں کی تالیف (جمع کرنا)

☆ منصوبہ تدریس اور تعلیمی اشیاء کی تخلیق کرنا۔

نوٹ۔ سبھی تربیت یافتگان درجہ اول تا ہشتم تک کے نصابی کتابوں کا تجزیاتی مطالعہ کرینگے۔

सप्तम पत्र (ग)
मुण्डारी भाषा शिक्षण : विषयवस्तु सह शिक्षण विधि

इकाई 1 : मुण्डारी भाषा का परिचय एवं स्वरूप

- भाषा का परिभाषा, स्वरूप एवं महत्व।
- मुण्डारी भाषा के इतिहास की संक्षिप्त जानकारी।
- मानक मुण्डारी भाषा के माध्यम से संक्षेपण एवं पल्लवन।
- मुण्डारी भाषा एवं उनकी विशेषताएँ।
- मुण्डारी भाषा एवं उसकी वर्तनी।

इकाई 2 : मुण्डारी भाषा का अर्थ एवं परिचय

- मुण्डारी का अर्थ, परिभाषा एवं महत्व
- मुण्डारी के माध्यम से शिक्षा
- मुण्डारी शिक्षण के उद्देश्य
- झारखण्ड की प्रमुख जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषाओं का सामान्य परिचयः
  - जनजातीय भाषाएँ – मुंडारी, हो, खड़िया, संताली एवं कुडुख,
  - क्षेत्रीय भाषाएँ – पंचपरगनिया, खोरठा, कुड़माली एवं नागपुरी।

इकाई 3 : गद्य–पद्य शिक्षण

गद्य शिक्षण – परिचय, गद्य शिक्षण की विधि – आदर्श वाचन, अनुकरण, मौन वाचन, अभिनव विधि, प्रश्नोत्तर विधि, घटना वर्णन, दृश्य वर्णन।

पद्य शिक्षण – परिचय, पद्य शिक्षण की विधि–सस्वर वाचन, गीत विधि, व्याख्या विधि, अर्थ भाव बोध, अनुकरण विधि

इकाई 4 : मुण्डारी व्याकरण

- ध्वनि परिचय एवं उनके भेद।
- मुण्डारी के स्वर एवं व्यंजन तथा उनका वर्गीकरण
- शब्द परिचय एवं उनके भेद
- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया विशेषण, लिंग, वचन, काल।

इकाई 5 : मुण्डारी भाषा शिक्षण

- पाठ्यपुस्तक विधि, प्रश्नोत्तर विधि, व्याख्या विधि, खेल विधि, देखो और कहो, कहानी विधि।

क्रियाकलाप :

- कहानी एवं कविता लेखन प्रतियोगिता में सहभागिता।
- पत्र लेखन, आवेदन पत्र लेखन, संक्षेपण लेखन में भाग लेना।
- बाल गीत, खेल गीत, शिकार गीत, मेला गीत आदि का संकलन करना।
- मुण्डारी भाषा में पाये जाने वाले अन्य भाषाओं के शब्दों की सूची तैयार करना।
- स्थानीय परिवेश में प्रचलित लोकोक्तियों एवं मुहावरों का संकलन करना।
- पाठ योजना एवं शिक्षण सामग्री का निर्माण करना।

नोट : सभी प्रशिक्षाणार्थी कक्षा 01 से कक्षा 08 तक की पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करेंगे।

सप्तम पत्र (घ)
संताली भाषा शिक्षण : विषयवस्तु सह शिक्षण विधि

इकाई 1 : भाषा का अर्थ एवं स्वरूप

- भाषा का अर्थ, परिभाषा, उद्देश्य एवं स्वरूप
- वर्तमान परिप्रेक्ष्य में संताली भाषा का महत्त्व
- संताली भाषा के क्षेत्र एवं जनसंख्या।
- संताली भाषा की विशेषताएँ
- संताली भाषा का क्षेत्ररूप

इकाई 2 : लिपि का अर्थ एवं स्वरूप

- लिपि का क्रय विकास – चित्रलिपि, भाललिपि, ध्वनिलिपि।
- लिपि का महत्व।
- भारतीय लिपि एवं संताली लिपि।
- स्वर, वर्ण, व्यंजन वर्ण एवं उसकी विशेषताएँ।

इकाई 3 : शब्द का अर्थ, संरचना एवं परिचय

- संताली शब्द की उत्पत्ति
- संताली शब्द के भेद – युग्म भेद, विपरीतार्थक शब्द, पर्यायवाची शब्द।

इकाई 4 : संताली पद्य–गद्य शिक्षण

- संताली साहित्य का सामान्य परिचय।

पद्य साहित्य शिक्षण – परिचय, पद्य शिक्षण की विधि, लोकगीत, कविता विधि, लोरी, बाल गीत।

गद्य शिक्षण – परिचय, गद्य शिक्षण की विधि–लोककथा विधि, लोक नाथ विधि, लोक कहानी विधि, लोकवर्ता, लोकोक्ति, बुझौवल।

इकाई 5 : संताली व्याकरण शिक्षण

- संताली व्याकरण परिचय एवं भेद।

  संज्ञा, सर्वनाम, लिंग, वचन, पुरूष, कारक।

इकाई 6 : संताली भाषा शिक्षण विधि

- प्रश्नोत्तर विधि, अनुवाद विधि, व्याख्या विधि।
- कहानी लेखन विधि, निबंधन लेखन विधि एवं पत्र लेखन विधि
- चित्र द्वारा कहानी लेखन विधि, कहो विधि।

क्रियाकलाप :

- संताली कहानी, कविता, पत्र रचना, निबंध, गिनती, लेखन प्रतियोगिता में सहभागिता
- रंग भरो प्रतियोगिता में सहभागिता।
- मुहावरे एवं कुदुम प्रतियोगिता में सहभागिता।
- विभिन्न गतिविधियों में सहभागिता।

नोट :–सभी प्रशिक्षाणार्थी कक्षा 01 से कक्षा 08 तक की पाठ्यपुस्तकों की विश्लेषणात्मक अध्ययन करेंगे।

सप्तम पत्र (ङ)
हो भाषा शिक्षण : विषयवस्तु सह शिक्षण विधि

इकाई 1 : हो भाषा का परिचय एवं स्वरूप

- भाषा का परिचय, स्वरूप एवं महत्व।
- हो भाषा के इतिहास की संक्षिप्त जानकारी।
- मानक हो भाषा के माध्यम से संक्षेपण एवं पल्लवन।
- हो भाषा एवं उसकी विशेषताएँ
- हो भाषा एवं उसकी वर्तनी।

इकाई 2 : मातृभाषा हो का अर्थ एवं उद्देश्य

- मातृभाषा हो का अर्थ, परिभाषा एवं महत्व
- मातृभाषा हो के माध्यम से शिक्षा
- मातृभाषा हो शिक्षण के उद्देश्य
- झारखण्ड की प्रमुख जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषाओं का सामान्य परिचय :
- जनजातीय भाषाएँ – मुंडारी, हो, खड़िया, संताली एवं कुडुख, क्षेत्रीय भाषाएँ – पंचपरगनिया, खोरठा, कुडुमाली एवं नागपुरी।

इकाई 3 : हो गद्य–पद्य शिक्षण

गद्य शिक्षण – परिचय, गद्य शिक्षण की विधि–आदर्श वाचन, अनुकरण वाचन, मौन वाचन, अभिनय विधि, प्रश्नोत्तर विधि, घटना वर्णन, दृश्य वर्णन।

पद्य शिक्षण – परिचय, पद्य शिक्षण की विधि–सस्वर, वाचन, गीत विधि, व्याख्या विधि अर्थ, भाव बोध, अनुकरण विधि

इकाई 4 : हो व्याकरण

- ध्वनि परिचय एवं उसके भेद ।
- हो के स्वर एवं व्यंजन तथा उनका वर्गीकरण
- शब्द परिचय एवं उनके भेद
- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया विशेषण, लिंग, वचन, काल।

इकाई 5 : हो भाषा शिक्षण

- पाठ्यपुस्तक विधि, प्रश्नोंत्तर विधि, व्याख्या विधि, खेल विधि, देखो और कहो, कहानी विधि।

क्रियाकलाप :

- कहानी एवं कविता लेखन प्रतियोगिता में सहभागिता।
- पत्र लेखन, आवेदन पत्र लेखन, संक्षेपन लेखन में भाग लेना।
- बाल गीत, खेल गीत, शिकार गीत, मेला गीत आदि का संकलन करना।
- हो भाषा में पाये जाने वाले अन्य भाषाओं के शब्दों की सूची तैयार करना।
- स्थानीय परिवेश में प्रचलित लोकोक्तियों एवं मुहावरों का संकलन करना।
- पाठ योजना एवं शिक्षण सामग्री का निर्माण करना।

नोट :–सभी प्रशिक्षाणार्थी कक्षा 01 से कक्षा 08 तक की पाठ्यपुस्तकों की विश्लेषणात्मक अध्ययन करेंगे।

सप्तम पत्र (च)
खड़िया भाषा शिक्षण : विषयवस्तु सह शिक्षण विधि

इकाई 1 : खड़िया भाषा का परिचय एवं स्वरूप

- खड़िया भाषा का परिचय, स्वरूप एंव महत्व।
- खड़िया भाषा के इतिहास की संक्षिप्त जानकारी।
- मानक खड़िया भाषा के माध्यम से संक्षेपण एवं पल्लवन।
- खड़िया भाषा एवं उसकी विशेषताएँ
- खड़िया भाषा एवं उसकी वर्तनी

इकाई 2 : मातृभाषा खड़िया का अर्थ एवं उद्देश्य

- मातृभाषा खड़िया का अर्थ, परिभाषा एवं महत्व
- खड़िया के माध्यम से शिक्षा
- खड़िया शिक्षण के उद्देश्य
- झारखण्ड की प्रमुख जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषाओं का सामान्य परिचय :

  जनजातीय भाषाएँ–मुंडारी, हो, खड़िया, संताली एवं कुडुख,

  क्षेत्रीय भाषाएँ–पंचपरगनिया, मोरठा, कुड़वाली एवं नागपुरी।

इकाई 3 : खड़िया गद्य–पद्य शिक्षण

गद्य शिक्षण – परिचय, गद्य शिक्षण की विधि – आदर्श वाचन, अनुकरण वाचन, मौन वाचन, अभिनव विधि, प्रश्नोत्तर विधि, घटना वर्णन, दृश्य वर्णन।

पद्य शिक्षण – परिचय, पद्य शिक्षण की विधि–सस्वर वाचन, गीत विधि, व्याख्या विधि अर्थ भाव बोध, अनुकरण विधि।

इकाई 4 : खड़िया व्याकरण

- ध्वनि परिचय एवं उनके भेद।
- खड़िया के स्वर एवं व्यंजन तथा उनका वर्गीकरण
- शब्द परिचय एवं उनके भेद
- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया विशेषण, लिंग, वचन, काल।

इकाई 5 : खड़िया व्याकरण

- पाठ्यपुस्तक विधि, प्रश्नोत्तर विधि, व्याख्या विधि, खेल विधि, देखो और कहो, कहानी विधि।

क्रियाकलाप :

- कहानी एवं कविता लेखन प्रतियोगिता में सहभागिता।
- पत्र लेखन, आवेदन पत्र लेखन, संक्षेपन लेखन में भाग लेना।
- बाल गीत, खेल गीत, शिक्षण गीत, मेला गीत आदि का संकलन करना।
- खड़िया भाषा में पाये जाने वाले अन्य भाषाओं के शब्दों की सूची तैयार करना।
- स्थानीय परिवेश में प्रचलित लोकोक्तियों एवं मुहावरों का संकलन करना।
- पाठ योजना एवं शिक्षण सामग्री का निर्माण करना।

नोट :–सभी प्रशिक्षाणार्थी कक्षा 01 से कक्षा 08 तक की पाठ्यपुस्तकों की विश्लेषणात्मक अध्ययन करेंगे।

सप्तम पत्र (छ)
कुड़ुख भाषा शिक्षण : विषयवस्तु सह शिक्षण विधि

इकाई 1 : कुड़ुख भाषा का परिचय एवं स्वरूप

- कुड़ुख भाषा का सामान्य परिचय।
- कुड़ुख भाषा के इतिहास की संक्षिप्त जानकारी।
- कुड़ुख भाषा का मानक स्वरूप।
- झारखण्ड की प्रमुख भाषाएँ–संताली, मुण्डारी,हो, खड़िया, नागपुरी, खोरठा, पंचपरगनिया, कुड़माली – सामान्य परिचय एवं इनके साथ कुड़ुख भाषा की सामानताएँ एवं विभिन्नताएँ।

इकाई 2 : मातृभाषा का परिचय एवं महत्व

- मातृभाषा कुड़ुख का सामान्य परिचय।
- मातृभाषा कुड़ुख के माध्यम से शिक्षा।
- कुड़ुख भाषा शिक्षण के उद्देश्य।
- मातृभाषा कुड़ुख एवं उसकी विशेषताएँ।
- वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कुड़ुख भाषा का महत्व

इकाई 3 : कुड़ुख व्याकरण

- कुड़ुख वर्णमाला
- कुड़ुख ध्वनियों की विशेषता
- कुड़ुख के स्वर एवं व्यंजन तथा उनका वर्गीकरण
- शब्द परिचय एवं उनके भेद
- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया विशेषण, लिंग, वचन, काल।

इकाई 4 : कुड़ुख गद्य–पद्य शिक्षण

कुड़ुख गद्य शिक्षण–परिचय, गद्य शिक्षण की विधि – आदर्श वाचन, अनुकरण वाचन, मौन वाचन, अभिनय विधि, प्रश्नोत्तर विधि, घटना वर्णन, दृश्य वर्णन।

कुड़ुख पद्य शिक्षण – परिचय, पद्य शिक्षण की विधि – सस्वर वाचन, गीत विधि, व्याख्या विधि, अर्थ भाव बोध, अनुकरण विधि।

इकाई 5 : कुड़ुख भाषा शिक्षण विधि

- पाठ्यपुस्तक विधि, प्रश्नोत्तर विधि, व्याख्या विधि, खेल विधि, देखो और कहो, कहानी विधि।

क्रियाकलाप :

- कहानी एवं कविता लेखन प्रतियोगिता में सहभागिता।
- पत्र लेखन, आवेदन पत्र लेखन, संक्षेपन लेखन में भाग लेना।
- खड़िया लोक गीत एवं लोक कथा संग्रह करना।
- कुड़ुख भाषा में पाये जाने वाले अन्य भाषाओं के शब्दों की सूची तैयार करना।
- स्थानीय परिवेश में प्रचलित लोकोक्तियों एवं मुहावरों का संकलन करना।
- पाठ योजना एवं शिक्षण सामग्री का निर्माण करना।

नोट :–सभी प्रशिक्षाणार्थी कक्षा 01 से कक्षा 08 तक की पाठ्यपुस्तकों की विश्लेषणात्मक अध्ययन करेंगे।

सप्तम पत्र (ज)
नागपुरी भाषा शिक्षण : विषयवस्तु सह शिक्षण विधि

इकाई 1 : भाषा का अर्थ एवं स्वरूप

- भाषा का अर्थ, परिभाषा, स्वरूप एवं महत्व।
- बोली और भाषा में अन्तर।
- नागपुरी भाषा का उद्‌भव विकास
- नागपुरी भाषा का आर्य भाषा से संबंध।
- राष्ट्रीय एकता में क्षेत्रीय भाषाओं का महत्व।
- नागपुरी भाषा की विशेषताएँ
- नागपुरी भाषा के माध्यम से संक्षेपण।

इकाई 2 : मातृभाषा का अर्थ एवं परिचय

- मातृभाषा का अर्थ एवं परिचय।
- मातृभाषा और सम्पर्क भाषा।
- मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा।
- मातृभाषा शिक्षण के उद्देश्य
- राष्ट्र के विकास में मातृभाषा की उपयोगिता।
- झारखण्ड की अन्य प्रमुख भाषाएँ–संताली, मुण्डारी, कडुख, हो, खड़िया,कुडमाली, खोरठा, पंचपरगनिया का सामान्य परिचय।

इकाई 3 : पद्य–गद्य शिक्षण

पद्य शिक्षण – पद्य की परिभाषा, पद्य विधाओं का परिचय (गीत, कविता, खण्डकाव्य, महाकाव्य)

पद्य शिक्षण की विधि – वाचन, सस्वर, वाचन, गीत लालित्य, व्याख्या विधि, अर्थ बोध, विधि, भाव बोध, अनुकरण विधि

गद्य शिक्षण– गद्य की परिभाषा, गद्य विधाओं का परिचय (कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध लेख आदि) गद्य शिक्षण की विधि–आदर्श वाचन, अनुकरण वाचन, कथा–कथन (कहानी) एवं अभिनव विधि, प्रश्नोत्तर विधि, घटना वर्णन, दृश्य वर्णन।

इकाई 4 : व्याकरण

- नागपुरी ध्वनियों की विशेषताएँ।
- नागपुरी के स्वर – व्यंजन ध्वनियाँ तथा उसके प्रयोग / व्यवहार।
- नागपुरी शब्द भंडार – देशज, तद्‌भव, तत्सम्, विदेशी एवं पाश्वर्वत्ती भाषाओं के शब्द।
- सहायक क्रिया आहे/हेके/हय का प्रयोग।
- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, लिंग, वचन, कारक, क्रिया।

इकाई 5 : भाषा शिक्षण विधि

- पाठ्यपुस्तक विधि, प्रश्नोत्तर विधि, व्याख्या विधि, लेख विधि, देखो और कहो, कहानी विधि।

क्रियाकलाप :

- कहानी, निबंध, गीत, कविता, लेखन प्रतियोगिता में सहभागिता,
- वाद–विवाद, भाषण, खेल–कूद, नृत्य गीत प्रतियोगिता में सहभागिता
- पत्र लेखन, आवेदन पत्र लेखन, संक्षेपण लेखन में भाग लेना।
- नागपुरी भाषा पर जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा तथा अन्य भाषा के प्रभाव डालने वाले शब्द/वाक्य की सूची तैयार करना।
- बाल गीत, खेल गीत, शिकार गीत, मेला गीत आदि का संकलन करना।
- नागपुरी मुहावरे, लोकोक्ति, पहली, मंत्र आद का संकलन करना। पाठ योजना एवं शिक्षण सामग्री का निर्माण करना।

नोट :– सभी प्रशिक्षाणार्थी कक्षा 01 से कक्षा 08 तक की पाठ्यपुस्तकों की विश्लेषणात्मक अध्ययन करेंगे।

सप्तम पत्र (झ)
कुड़माली भाषा शिक्षण : विषयवस्तु सह शिक्षण विधि

इकाई 1 : भाषा का अर्थ एवं स्वरूप

- भाषा का अर्थ, परिभाषा, स्वरूप एवं महत्व।
- कुड़माली भाषा के इतिहास की संक्षिप्त जानकारी।
- मानक कुड़माली भाषा के माध्यम से संक्षेपण।
- कुड़माली भाषा एवं उसकी प्रकृति।
- कुड़माली भाषा एवं क्षेत्रीय स्वरूप।

इकाई 2 : कुड़माली मातृभाषा का अर्थ एवं परिचय

- कुड़माली भाषा का परिचय, महत्व।
- कुड़माली भाषा के माध्यम से शिक्षा।
- कुड़माली भाषा शिक्षण के उद्देश्य।
- झारखण्ड की प्रमुख भाक्षाएँ–कुडुख, मुण्डारी, हो, संताली एवं क्षेत्रीय भाषाओं कुड़माली, नागपुरी, पंचपरगनिया, खोरठा का परिचय।

इकाई 3 : कुड़माली गद्य–पद्य शिक्षण

कुड़माली गद्य शिक्षण–परिचय, गद्य शिक्षण की विधि–आदर्श वाचन, अनुकरण वाचन, मौन वाचन, अभिनव विधि, प्रश्नोत्तर विधि, घटना वर्णन, दृश्य वर्णन।

कुड़माली पद्य शिक्षण – परिचय, पद्य शिक्षण की विधि–सस्वर, वाचन, गीत विधि, व्याख्या विधि, अर्थ भाव बोध, भाव बोध, अनुकरण विधि।

इकाई 4 : कुड़माली व्याकरण

- कुड़माली भाषा के ध्वनि के लक्षण एवं भाषायी ध्वनि। कुडमाली के स्वर (हहि कड़) एवं व्यंजन (पाहि कड़) तथा उनका वर्गीकरण।
- कुड़माली शब्द (साड़ा) परिचय एवं भेद।
- संज्ञा (आंगा), वचन (लेखा), लिंग (लिंग), सर्वनाम (अइजि), कारक (दसा)

इकाई 5 : कुड़माली भाषा शिक्षण विधि

- कुड़माली पाठ्यपुस्तक विधि, प्रश्नोत्तर विधि, व्याख्या विधि, लेख विधि, देखों और कहो, कहानी विधि, सुनो और बोलो।

क्रियाकलाप :

- कुड़माली कहानी, कविता रचना एवं लेखन प्रतियोगिता, पर्व त्यौहार, संस्कृत में सहभागिता।
- कुड़माली पत्र लेखन, आवेदन पत्र लेखन, संक्षेपण लेखन में भाग लेना।
- खेल–कूद, नाच–गान एवं अखाड़ा में शामिल होना।
- कुड़माली भाषा का जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषाओं पर प्रभाव डालने वाले शब्द/वाक्य की सूची तैयार करना।
- कुड़माली क्षेत्र में प्रचलित लोकोक्तियों एवं मुहावरों का संकलन करना।
- कुड़माली सूक्तियों एवं सुभाषितों का लेखन।
- कुड़माली पाठ योजना एवं शिक्षण सामग्री का निर्माण करना।

नोट :–सभी प्रशिक्षाणार्थी कक्षा 01 से कक्षा 08 तक की पाठ्यपुस्तकों की विश्लेषणात्मक अध्ययन करेंगे।

सप्तम पत्र (ञ)
खोरठा भाषा शिक्षण : विषयवस्तु सह शिक्षण विधि

इकाई 1 : खोरठा भाषा का अर्थ एवं स्वरूप

- भाषा का अर्थ, परिभाषा, स्वरूप एवं महत्व।
- बोली और भाषा में अन्तर।
- खोरठा भाषा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
- मानक खोरठा भाषा के माध्यम से संक्षेपण।
- खोरठा भाषा की विशेषताएँ।
- खोरठा भाषा और उसके क्षेत्रीय भेद।

इकाई 2 : खोरठा मातृभाषा का अर्थ एवं परिचय

- मातृभाषा का अर्थ, परिभाषा, महत्व,
- राष्ट्र के विकास में मातृभाषा की उपयोगिता।
- मातृभाषा शिक्षण के उद्देश्य
- झारखण्ड की प्रमुख भाषाएँ – कुडुख, मुण्डारी, हो, संताली एवं क्षेत्रीय भाषाओं कुड़माली, नागपुरी, पंचपरगनिया, खोरठा का सामान्य परिचयय एवं खोरठा का आदिवासी एवं सदानी भाषाओं से संबंध।

इकाई 3 : खोरठा गद्य–पद्य शिक्षण

गद्य शिक्षण–परिचय, गद्य शिक्षण की विधि–आदर्श वाचन, अनुकरण वाचन, मौन वाचन, अभिनव विधि, प्रश्नोत्तर विधि, घटना वर्णन दृश्य वर्णन।

पद्य शिक्षय–परिचय, पद्य शिक्षण की विधि–सस्वर वाचन, गीत विधि, व्याख्या विधि, अर्थ, अर्थ भाव बोध, भाव बोध, अनुकरण विधि।

इकाई 5 : खोरठा भाषा शिक्षण विधि

- पाठ्यपुस्तक विधि, प्रश्नोत्तर विधि, व्याख्या विधि, खेल विधि, देखो और कहो, कहानी विधि, सुनो और बोलो, चित्र विधि, कहानी विधि।

क्रियाकलाप :

- कहानी, कविता, निबंध एवं नृत्य–गीत प्रतियोगिता में सहभागिता।
- पत्र लेखन, आवेदन पत्र लेखन, संक्षेपण लेखन में भाग लेना।
- खोरठा भाषा पर अन्य सदानी एवं आदिवासी भाषाओं के प्रभाव डालने वाले शब्दों/वाक्य की सूची तैयार करना।
- स्थानीय परिवेश में प्रचलित लोकोक्तियों एवं मुहावरों का संकलन करना।
- सुक्तियों एवं सुभाषितों, पहेलियों का संकलन एवं लेखन।
- मेला, पर्व–त्यौहार, अखाड़ा, संस्कृत, खेल–कूद, नाच–गान एवं सांस्कृतिक कार्यो में सहभागिता।
- पाठ योजना एवं शिक्षण सामग्री का निर्माण करना।
- शुद्ध उच्चारण से संबंधित ऑडियो कैसेट बनाना।

नोट :–सभी प्रशिक्षाणार्थी कक्षा 01 से कक्षा 08 तक की पाठ्यपुस्तकों की विश्लेषणात्मक अध्ययन करेंगे।

सप्तम पत्र (ट)
पंचपरगनिया भाषा शिक्षण : विषयवस्तु सह शिक्षण विधि

इकाई 1 : पंचपरगनिया भाषा का अर्थ एवं स्वरूप

- पंचपरगनिया भाषा का अर्थ, परिभाषा, स्वरूप एवं महत्व।
- पंचपरगनिया भाषा के इतिहास की संक्षिप्त जानकारी।
- मानव पंचपरगनिया भाषा के माध्यम से संक्षेपण।
- पंचपरगनिया एवं उसकी विशेषताएँ।
- भाषा और बोली

इकाई 2 : पंचपरगनिया मातृभाषा का अर्थ एवं परिचय

- पंचपरगनिया मातृभाषा का अर्थ, परिभाषा एवं महत्व।
- पंचपरगनिया मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा।
- पंचपरगनिया मातृभाषा शिक्षण के उद्देश्य।
- झारखण्ड की प्रमुख भाषाएँ–कुडुख, मुण्डारी, हो, संताली एवं क्षेत्रीय भाषाओं कुडुमाली, नागपुरी, पंचपरगनिया, खोरठा का सामान्य परिचय।

इकाई 3 : पंचपरगनिया गद्य–पद्य शिक्षण

गद्य शिक्षण – परिचय, गद्य शिक्षण की विधि–आदर्श वाचन, अनुकरण वाचन, मौन वाचन, अभिनव विधि, वार्तालाप विधि, घटना वर्णन, दृश्य वर्णन।

पद्य शिक्षण – परिचय, पद्य शिक्षण की विधि–सस्वर वाचन, गीत विधि, व्याख्या विधि, अर्थ, भाव बोध, भाव बोध, बाल गीत, मंत्र गीत, लोरी।

इकाई 4 : पंचपरगनिया व्याकरण

- पंचपरगनिया ध्वनि के लक्षण एवं भाषायी ध्वनि।
- पंचपरगनिया के स्वर, व्यंजन तथा उनका वर्गीकरण।
- पंचपरगनिया लिंग, वचन, कारक, काल, वाच्य, उपसर्ग, प्रत्यय, अनेक शब्द के बदले एक शब्द।

इकाई 5 : पंचपरगनिया भाषा शिक्षण विधि

- पाठ्यपुस्तक विधि, प्रश्नोंत्तर विधि, व्याख्या विधि, खेल विधि, देखो और कहो, कहानी विधि।

क्रियाकलाप :

- कहानी एवं कविता लेखन प्रतियोगिता में सहभागिता।
- पत्र लेखन, आवेदन पत्र लेखन, संक्षेपण लेखन में भाग लेना।
- पंचपरगनिया भाषा पर क्षेत्रीय भाषा के प्रभाव डालने वाले शब्द/वाक्य की सूची तैयार करना।
- स्थानीय परिवेश में प्रचलित लोकोक्तियों एवं मुहावरों का संकलन करना।
- सूक्तियों एवं सुभाषितों का लेखन।
- पाठ योजना एवं सामग्री का निर्माण करना।

नोट :–सभी प्रशिक्षाणार्थी कक्षा 01 से कक्षा 08 तक की पाठ्यपुस्तकों की विश्लेषणात्मक अध्ययन करेंगे।

सप्तम पत्र (ठ)
गणित शिक्षण : विषयवस्तु सह शिक्षण विधि

इकाई 1 : गणित शिक्षण का स्वरूप, उद्देश्य एवं क्षेत्र

- गणित का स्वरूप एवं शैक्षिक महत्व।
- प्राथमिक स्तर पर गणित शिक्षण का उद्देश्य।

इकाई 2 : गणित शिक्षण की विधियाँ

- आगमन विधि
- निगमन विधि
- संश्लेषण विधि
- विश्लेषण विधि

इकाई 3 : अंकगणित

- प्राकृत संख्यां, पूर्ण संख्या, पूर्णांक, सम संख्या, विषम संख्या, बाईनरी क्रिया, परिमेय संख्या, अपरिमेय संख्या।
- संख्या एवं संख्या प्रणाली, संख्या रेखा।
- स्थानीय मान का ज्ञान।
- भिन्न–साधारण एवं दशमलव भिन्न, आवर्त्त दशमलव।
- अपवर्त्तन एवं अपवर्त्य।
- लघुत्तर समापवर्त्य एवं महत्तव समापवर्त्यक।
- एकिक नियम।
- अनुपात एवं समानुपात का ज्ञान

इकाई 4 : बीजगणित का परिचय

- गुणनखंड
- समीकरण
- सरल, युगपद, वर्ग समीकरण।

इकाई 5 : रेखागणित

- बिन्दु, रेखा, रेखाखण्ड, किरण, कोण तथा इसके प्रकार।
- त्रिभुज तथा इसके प्रकार, समानान्तर रेखाएँ।

इकाई 6 : क्षेत्रमिति

- वर्ग एवं आयत का परिमाण एवं क्षेत्रफल का ज्ञान।
- त्रिभुज का परिमाण एवं क्षेत्रफल का ज्ञान।
- समानान्तर चतुर्थ, समलंब चतुर्थज, विषम कोण, समचतुर्भुज का ज्ञान।

क्रियाकलापः

- 30^0, 45^0, 60^0, 75^0, 90^0, 120^0, 135^0 कोण की रचना करना।
- समबाहु, समद्विबाहु, विषमबाहु, त्रिभुज की रचना करना।
- आयत एवं वर्ग की रचना करना।
- समानान्तर, समलंब एवं विषण कोण, समचतुर्भज की रचना करना।
- वृत की रचना करना।
- किन्हीं दो खेल के मैदान की लम्बाई एवं चौड़ाई मापकर रिपोर्ट तैयार करना।
- गिनतारा का निर्माण करना।
- पाठ योजना निर्माण करना।

नोट :–सभी प्रशिक्षाणार्थी कक्षा 01 से कक्षा 08 तक की पाठ्यपुस्तकों की विश्लेषणात्मक अध्ययन करेंगे।

नवम पत्र

सामाजिक विज्ञान शिक्षण : विषयवस्तु सह शिक्षण विधि

इकाई 1 : पृथ्वी, पृथ्वी की गति, ऋतु परिवर्तन, आक्षांश–देशान्तर

- मौसम और जलवायु पर प्रभाव डालने वाले कारक
- पर्वत, पठार, मैदान, मृदा, चट्टान, नदी, हिमनदी, मरूस्थल
- देश, महादेश, सागर, महासागर
- प्राकृतिक आपदाएँ – बाढ़, भूकम्प, ज्वालामुखी, सुनामी।
- नक्शा, मानचित्र अध्ययन, चार्ट, रेखाचित्र एवं ग्लोब का अध्ययन।

इकाई 2 : भारत का प्राचीन इतिहास एवं प्राचीन सभ्यताएँ

- आदिम युग, पाषाण युग।
- प्राचीन भारतीय सभ्यता एवं वैदिक सभ्यता।
- मुगलकालीन एवं ब्रिटिश शासन।

इकाई 3 : भारतीय संविधान

- भारतीय संविधान का निर्माण एवं विशेषताएँ।
- राज्य के नीति निर्देशक तत्व।

इकाई 4 : केन्द्रीय एवं राज्य शासन

- केन्द्रीय एवं राज्य की कार्यपालिका, व्यवस्थापिका एवं न्यायपालिका।
- स्थानीय स्वशासन–जिला परिषद, ग्राम–पंचायत, नगरपालिका, नगर–निगम।

क्रियाकलाप :

- किन्हीं दो ऐतिहासिक स्थलों की जानकारी प्राप्त कर अभिलेख तैयार करना।
- स्थानीय ग्राम पंचायत / नगरपालिका/नगर निगम के क्षेत्र स्थिति एवं पदाधिकारियों के नाम तथा दो प्रमुख विकास योजनाओं की जानकारी प्राप्त करना।
- स्थानीय समस्याओं की जानकारी प्राप्त करना एवं इसके निदान के लिए सुझाव प्रस्तुत करना।

नोट :–सभी प्रशिक्षाणार्थी कक्षा 01 से कक्षा 08 तक की पाठ्यपुस्तकों की विश्लेषणात्मक अध्ययन करेंगे।

दशम पत्र

सामान्य विज्ञान शिक्षण : विषयवस्तु सह शिक्षण विधि

इकाई 1 : विज्ञान शिक्षण

- विज्ञान का अर्थ, प्रकृति एवं दैनिक जीवन में महत्व।
- प्राथमिक स्तर पर विज्ञान शिक्षण के उद्देश्य।
- वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास।
- विज्ञान शिक्षण की विधियाँ–प्रयोगशाला विधि, प्रदशन सह चर्चा विधि, समस्या निराकरण विधि, ह्यूरिस्टिक विधि।
- शिक्षण उपादान–चार्ट, मॉडल, स्लाहड, पाठ योजना तैयारी।

इकाई 2 : भौतिकी

- मापन–मापन की प्रणाली, मानक, इकाई।
- गति, कार्य, शक्ति, उर्जा एवं बल
- उष्मा – परिभाषा, थर्मामीटर, तापमान की विधियाँ, उष्मा द्वारा प्रसार।
- प्रकाश – परिचय, प्रकाश श्रोत, छाया, ग्रहण, परावर्तन एवं अपवर्तन, दर्पण एवं लेंस।

इकाई 3 : रसायन विज्ञान

- अणु, परमाणु
- तत्व, यौगिक, मिश्रण
- जल–जल की कठोरता एवं उसका शुद्धिकरण
- अम्ल, भस्म एवं लवण।

इकाई 4 : जीव विज्ञान

- सजीव एवं निर्जीव
- जन्तु एवं वनस्पति कोशिका
- मानव शरीर के अंग एवं अंगतंत्र
- पौधे के भाग एवं उनका परिचय

क्रियाकलाप :

- विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन करना।
- स्थानीय परिवेश में जन्तु एवं वनस्पति का संग्रह करना।
- स्थानीय परिवेश का भ्रमण करना।
- स्थानीय जल की अशुद्धता का पता लगाना।

नोट :–सभी प्रशिक्षाणार्थी कक्षा 01 से कक्षा 08 तक की पाठ्यपुस्तकों की विश्लेषणात्मक अध्ययन करेंगे।

एकादश पत्र : शिक्षण – अभ्यास
प्रथम एवं द्वितीय वर्ष

प्रतिवर्ष अभ्यास पाठ कार्यक्रम निम्नलिखित रूप में होगा।

1. सूक्ष्म शिक्षण (Micro Teaching) :

- सूक्ष्म शिक्षण के संबंध में व्याख्याता के द्वारा अर्थ एवं सामान्य जानकारी दी जाएगी।
- प्रति प्रशिक्षणार्थी को कम से कम सात सूक्ष्म शिक्षण देना होगा एवं कम से कम तीन
- सूक्ष्म शिक्षण अवलोकन कर उसका प्रतिवेदन (रिपोर्ट) प्रस्तुत करना आवश्यक है।
- सूक्ष्म शिक्षण विज्ञान के विषय को ग्रुप में बाँटकर कराया जाएगा।
- प्रति सूक्ष्म शिक्षण 5 मिनट का होगा एवं अंत में संपर्ण सूक्ष्म शिक्षण 15 मिनट का होगा।
- सूक्ष्म शिक्षण का पाठ योजना तैयार कर सूक्ष्म शिक्षण प्रस्तुत करना होगा।

2. प्रदर्शन पाठ/आदर्श पाठ (Demonstration Lesson) **:**

- सूक्ष्म शिक्षण का एक–एक आदर्श पाठ व्याख्याताओं द्वारा प्रस्तुत किया जाएगा।
- सूक्ष्म शिक्षण का आदर्श पाठ विषयवार व्याख्याताओं द्वारा प्रदर्शित किया जाएगा।
- कुल प्रदर्शन पाठ की संख्या 6 होगी।
- सभी प्रशिक्षणार्थियों की सभी प्रदर्शन पाठ में उपस्थिति अनिवार्य है।

3. **समालोचना पाठ** (Criticism Lesson) :

- प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी को कम से कम एक समालोचना पाठ प्रस्तुत करना अनिवार्य है।
- प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी को कम से कम पाँच समालोचना पाठ में उपस्थित रहकर एवं पाठ का अवलोकन कर रिपोर्ट प्रस्तुत करना अनिवार्य है।
- समालोचना पाठ की अवधि एक पूर्ण वर्गाविधि की होगी।

4. **शिक्षण – अभ्यास** (Practice Teaching):

- प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी को प्रतिवर्ष शिक्षण अभ्यास पाठ प्रस्तुत करना अनिवार्य है।
- प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी को प्रतिदिन कम से कम दो शिक्षण अभ्यास पाठ देना आवश्यक है।
- शिक्षण – अभ्यास के लिए पाठ योजना शिक्षण अधिगम सामग्री एवं विषय की तैयारी का साथ प्रस्तुत करना है।

  शिक्षण – अभ्यास के दौरान प्रशिक्षाणार्थी को दैनिक दैनन्दिनी (डायरी) लिखना आवश्यक है।

  द्वितीय वर्ष में प्रदर्शन पाठ एवं समालोचना पाठ प्रस्तुत करना आवश्यक नहीं है।

  प्रथम वर्ष की भाँति द्वितीय वर्ष में सात सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास पाठ प्रस्तुत करना एवं तीन सूक्ष्म शिक्षण पाठ का रिपोर्ट प्रस्तुत करना आवश्यक है।

  द्वितीय वर्ष में 33 शिक्षण अभ्यास पाठ प्रस्तुत करना आवश्यक है। जिसमें प्रत्येक विषय से दो शिक्षण अभ्यास होना चाहिए।

द्वादश पत्र
कम्प्यूटर (COMPUTER)

1. कम्प्यूटर के सभी अवयवों एवं संबंधित उपकरणों की जानकारी ।
2. कम्प्यूटर ऑपरेशन की जानकारी।
3. Logo का परिचय एवं उसके Commands की जानकारी।
4. D.W. Basic Programming का परिचय एवं उसके Commands की जानकारी।
5. Internet का परिचय एवं Internet browse करने की जानकारी।

सत्रगत–कार्य :

1. कम्प्यूटर के मुख्य अवयवों एवं उपकरणों का चित्रण एवं नामकरण।
2. Logo के 5 Output का चित्रण।
3. D.W. Basic के 5 Output का चित्रण
4. Internet की प्रक्रिया का चित्रण एवं वर्णन
5 Logo के 5 Output प्रदशित करना
6 D.W. Basic के 5 Output प्रदशित
7 Internet खोजना एवं browser करके दिखाया।

त्रयोदश पत्र : कार्यानुभव एवं शारीरिक शिक्षा

कार्यानुभव : निम्नलिखित पाँच कार्यानुभवों में से किन्हीं दो करना अनिवार्य है।

1. बागवानी (Gardening) :

- बागवानी में प्रयुक्त होने वाले औजारों जैसे – खुरपी, हंसुआ, कुदाल, ग्रास – कटर, फुलझरी इत्यादि के प्रयोग की जानकारी होना।
- जर्मनी की तैयारी, खाद, डालना, निराई करना, क्यारी तैयार करना।
- सिंचाई हेतु नाली तैयार करना।
- विभिन्न मौसमों में उपजने वाले साग–सब्जियों का बिचड़ा तैयार करना, उन्हें लगाना तथा उनकी देख–रेख करना।

2. कृषि (Agriculture) :

कृषि उपकरण – हल, ट्रैक्टर, पावरटीलर, हेंगा, पाल्टा, कुदाल, खुरपी, हैसुआ आदि के संबंध में जानकारी ले कर उनका उपयोग आवश्यकतानुसार करना।

प्रमुख खरीफ फसल जैसे – धान, मकई, ज्वार, बाजरा, उड़व, गोंदली तथा रबी फसल जैसे – चना, मूँग, कुरथी, जौ, आदि की जानकारी प्राप्त करना एवं दोनों तरफ की फसलों में से एक–एक फसल उपजाना।

- क्यारी की तैयारी एवं पौधाशाला निर्माण की विधि जानना एवं उन्हें तैयार करना।
- उन्नत किस्म के बीजों की जानकारी प्राप्त करना, चुनाव करना तथा उनका प्रयोग करना।

3. गृह विज्ञान (Home Science) :

- संतुलित आहार की दृष्टि से भोज्य–पदार्थें की जानकारी प्राप्त कर इनका सही ढंग से उपयोग करना।
- भोज्य पदार्थो का संग्रह, परीक्षण एवं प्रबंधन करना।
- रूमाल, टेबल–क्लॉथ, तकिना, गिलाफ एवं किसी भी वस्तु से पाँवदान तैयार करना।
- दीवार – सजवाट, कमरों की सजावट, उत्सव एवं कार्यक्रमों के समय सजावट तथा रंगोली बनाना।

4. कोलाज कार्य :

- स्थानीय छीजन एवं बेकार वस्तुओं से उपयोगी समान तैयार करना।
- विभिन्न प्रकार के चेपक की जानकारी प्राप्त करना एवं उनका उपयोग करना।
- रंगीन एवं विभिन्न प्रकार के कागज, बीज, पत्ती, घास, चिड़ियों के पंख आदि से बने खिलौने अथवा फूलदानी तैयार करना।
- शुभकामना कार्ड, बधाई, कार्ड, कार्यक्रम संबंधी कार्ड एवं निमंत्रण कार्ड तैयार करना।

5. कटाई एवं सिलाई (Cutting & Tailoring) :

- कटाई एवं सिलाई के औजारों का परिचय एवं उनका प्रयोग करना।
- विभिन्न स्विच जैसे–रनिंग स्टिच, हेमिंग स्टिच, बैक स्चिट, क्रॉस स्टिच, पंचिग स्टिच, कट वर्क, बटन हॉल स्टिच, जमा स्टिच इसमें से किसी छः स्टिच का अभ्यास कर नमूना तैयार करना।
- 2 लेडीज एवं दो जेन्ट्स रूमाल तैयार करना।
- 1 टेबूल क्लॉथ तैयार करना।
- फ्रॉक–समीज, जांघिया, कुर्ता–पायजामा, बाबा सूट मे से हीं किन्हीं दो सेट को तैयार करना।

6. शारीरिक शिक्षा :

- ड्रिल, मार्चिंग एवं मार्च पास्ट का अभ्यास करना।
- प्रातः कालीन व्यायाम में भाग लेना।
- संध्या समय खेल में भाग लेना।
- दौड़ लम्बी–कूद, उँची–कूद, रस्सी–कूद मे भाग लेना।
- फुटबॉल, क्रिकेट, बास्केट बॉल एवं कबड्डी में से कम से कम एक खेल में भाग लेना।
- सूर्य नमस्कार, वज्रासन, सर्वांगासन, शीर्षासन में से किन्हीं दो का अभ्यास।
- स्काउट–गाइड क्रियाशीलन में भाग लेना।

चतुर्दश पत्र : सामुदायिक जीवन
प्रथम एवं द्वितीय वर्ष

संस्थान में :

1. दैनिक प्रार्थना में भाग लेना।
2. महाविद्यालय परिसर, छात्रावास, शौचालय एवं मैदान की सफाई करना।
3. स्थानीय/राष्ट्रीय महत्व के दिवसों, जयन्तियों एवं प्रमुख उत्सवों का आयोजन कर उसमें भाग लेना।
4. सांस्कृतिक कार्यक्रमों, मेला एवं प्रदर्शनी का आयोजन कर उसमें भाग लेना।
5. सामुहिक सहभोज का आयोजन कर उसमें भाग लेना।
6. रोगी/बच्चो/मित्र की सहायता एवं जरूरतमंद व्यक्तियों की सहायता करना।
7. महाविद्यालय एवं छात्रावास की व्यवस्था हेतु समिति का गठन कर उसमें भाग लेना।
8. सेमिनार, कार्यशाला एवं व्याख्यानामा का आयोजन करना।
9. शैक्षिक चल–चित्र/वृतचित्र/स्लाइड/सी.डी. के प्रदर्शन का आयोजन करना।
10. वार्षिकोत्सव/वार्षिक खेलकूद समारोह का आयोजन करना।

समुदाय में :

1. समुदाय का शैक्षिक सर्वेक्षण कर उसका रिपोर्ट तैयार करना।
2. समुदाय में श्रमदान एवं सेवा शिविर का आयोजन करना।
3. ग्रामीण उत्सव एवं कार्यक्रमों में भाग लेना।
4. समुदाय में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करना।
5. साक्षरता अभियान एवं महिला सशक्तिकरण कार्यक्रमों में सहयोग करना।
6. सार्वजनिक संपत्ति की सुरक्षा, प्रौढ़ शिक्षा/साक्षरता, स्वास्थ्य संबंधी शिक्षा के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के लिए विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन करना यथानुक्कड़, प्रभाव फेरी, रूट मार्च, प्रदर्शनी, पोस्टर तैयार करना एवं चिपकाना आदि।
7. पड़ोसी विद्यालय में सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं खेलकूद का आयोजन करना।

निर्देश – महाविद्यालय/संस्थान में उपुर्यक्त क्रियाशीलनों का संपादन सुविधानुसार यथासम्भव प्रथम एवं द्वितीय वर्ष के शैक्षिक सत्र में पूरा करेंगे और इसका अभिलेख प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी तैयार करेंगे।

क्रियाशीलनों एवं सहभागिता के आधार पर इनका आन्तरिक मूल्यांकन होगा।